

रविवार 31 अगस्त, 2025

विषय — मसीह यीशु

स्वर्ण पाठ: 1 यूहन्ना 3 : 18

"हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"

उत्तरदायी अध्ययन: इफिसियों 5 : 1, 2

गलातियों 3 : 26-28

- ¹ इसलिये प्रिय, बालकों की नाई परमेश्वर के सदृश बनो।
- ² और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।
- ²⁶ क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।
- ²⁷ और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।
- ²⁸ अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 1 यूहन्ना 3 : 7

- ⁷ हे बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाई धर्मी है।

2. 1 राजा 3 : 3 (से :), 5-7 (से 2nd :), 9 (से दिल), 11, 12 (से;)

- ³ सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता था और अपने पिता दाऊद की विधियों पर चलता तो रहा।
- ⁵ गिबोन में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा, जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं, वह मांग।
- ⁶ सुलैमान ने कहा, तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा, क्योंकि वह अपने को तेरे सम्मुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धर्म और मन की सीधे से चलता रहा; और तू ने यहां तक उस पर करुणा की थी कि उसे उसकी गद्दी पर बिराजने वाला एक पुत्र दिया है, जैसा कि आज वर्तमान है।

- 7 और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तूने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का सा हूँ जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता।
- 9 तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूँ; क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?
- 11 तब परमेश्वर ने उस से कहा, इसलिये कि तू ने यह वरदान मांगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश मांगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान मांगा है इसलिये सुन,
- 12 मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूँ, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूँ, यहां तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहिले कोई कभी हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा।

3. सभोपदेशक 4 : 13

- 13 बुद्धिमान लड़का दरिद्र होन पर भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से अधिक उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न करे।

4. यूहन्ना 10 : 23-30

- 23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।
- 24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
- 25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं।
- 26 परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
- 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
- 28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
- 29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
- 30 मैं और पिता एक हैं।

5. मत्ती 18 : 2-6, 10-14

- 2 इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया।
- 3 और कहा, मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।
- 4 जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।
- 5 और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।
- 6 पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता।

- 10 देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं।
- 11 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआ का उद्धार करने आया है।
- 12 तुम क्या समझते हो यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो क्या निन्नानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूँढ़ेगा?
- 13 और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा।
- 14 ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो।

6. मत्ती 19 : 14 (यीशु)

- 14 यीशु ने कहा, बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।

7. नीतिवचन 22 : 6

- 6 लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उस को चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।

8. 1 तीमथियुस 4 : 4-6, 10-14 (से 1st), 15, 16

- 4 क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए।
- 5 क्योंकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से शुद्ध हो जाती है॥
- 6 यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा: और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जा तू मानता आया है, तेरा पालन-पोषण होता रहेगा।
- 10 क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का, और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।
- 11 इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह।
- 12 कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।
- 13 जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह।
- 14 उस वरदान से जो तुझ में है निश्चिन्त न रह।
- 15 उन बातों को सोचता रह, और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।
- 16 इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुनने वालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा॥

9. रोमियो 15 : 5-7

- 5 और धीरज, और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे, कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो।
- 6 ताकि तुम एक मन और एक मुंह होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो।
- 7 इसलिये, जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 18 : 3-9

नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया। यीशु ने निर्भीकता से, इंद्रियों के मान्यता प्राप्त सबूतों के खिलाफ, फरिसासिक पंथों और प्रथाओं के खिलाफ काम किया।

2. 51 : 28 (से.)

यीशु निःस्वार्थ था।

3. 52 : 1-2 (से 1st .), 19-28

बचपन से ही, वह अपने "पिता के व्यवसाय" में शामिल थे।

"दुखों का आदमी" भौतिक जीवन और बुद्धिमत्ता की श्रेष्ठता और सभी समावेशी ईश्वर की ताकतवर वास्तविकता को अच्छी तरह से समझता है। ये मन की चिकित्सा या क्रिएचरियन साइंस के दो मुख्य बिंदु थे, जिसने उन्हें प्यार से सशस्त्र किया। ईश्वर की सर्वोच्च सांसारिक प्रतिनिधि, ईश्वरीय शक्ति को प्रतिबिंबित करने की मानवीय क्षमता की बात करते हुए, केवल अपने युग के लिए नहीं, बल्कि सभी युगों के लिए, अपने शिष्यों से कहा। "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा;" और "और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे।"

4. 54 : 1-10

अपने मानव जीवन की परिमाण के माध्यम से, उन्होंने दिव्य जीवन का प्रदर्शन किया। अपने शुद्ध स्नेह के आयाम से, उन्होंने प्यार को परिभाषित किया। सत्य के मिलन के साथ, उन्होंने त्रुटि को समाप्त कर दिया। इसे देखकर नहीं; दुनिया ने उसकी धार्मिकता को स्वीकार नहीं किया, लेकिन पृथ्वी को सद्भाव प्राप्त हुआ जिसे उसके गौरवशाली उदाहरण ने पेश किया।

उनके शिक्षण और उदाहरण का अनुसरण करने के लिए कौन तैयार है? सभी को जल्द से जल्द या बाद में खुद को मसीह में रखना चाहिए, भगवान का सही विचार।

5. 63 : 5 (भे)-11

विज्ञान में मनुष्य आत्मा की संतान है। सुंदर, अच्छा और शुद्ध उसके वंश का गठन करते हैं। उसका मूल, नश्वर की तरह, पाशविक वृत्ति में नहीं है, और न ही वह बुद्धि तक पहुँचने से पहले भौतिक परिस्थितियों से गुजरता है। आत्मा उसका मूल और होने का परम स्रोत है; परमेश्वर उसका पिता है, और जीवन उसके होने का नियम है।

6. 130 : 9-25

यह संदेह करना नासमझ है कि यदि वास्तविकता ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत के साथ पूर्ण सामंजस्य है, — यदि विज्ञान, जब समझा और प्रदर्शित किया जाता है, तो सभी कलह को नष्ट कर देगा,— चूँकि आप मानते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है; इस आधार से यह इस प्रकार है कि अच्छे और इसके मधुर संगीतकारों में सर्व-शक्ति होती है।

क्रिश्चियन साइंस, ठीक से समझे जाने पर, मानव मन को उन भौतिक मान्यताओं से वंचित कर देगा जो आध्यात्मिक तथ्यों के विरुद्ध युद्ध करती हैं; और सत्य के लिए जगह बनाने के लिए इन भौतिक मान्यताओं का खंडन और बहिष्कार किया जाना चाहिए। आप पहले से भरे हुए बर्तन की सामग्री में कुछ नहीं जोड़ सकते। पदार्थ में वयस्कों के विश्वास को हिलाने और ईश्वर में विश्वास का एक कण पैदा करने के लिए लंबे समय तक श्रम करना, - शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाने के लिए आत्मा की क्षमता का एक संकेत, - लेखक ने अक्सर छोटे बच्चों के लिए हमारे मास्टर के प्यार को याद किया है, और समझा है कि वास्तव में कितना जैसे कि वे स्वर्गीय राज्य के हैं।

7. 236 : 23-6

माता-पिता को चाहिए कि वे जल्द से जल्द अपने बच्चों को स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य सिखाएं। बच्चे वयस्कों की तुलना में अधिक व्यवहार करने योग्य होते हैं, और वे सरल सत्यों से प्यार करना अधिक आसानी से सीखते हैं जो उन्हें खुश और अच्छा बना देगा।

यीशु छोटे बच्चों को गलत से आज़ादी और सही के प्रति ग्रहणशीलता के कारण प्यार करते थे। जबकि उम्र दो मतों के बीच रुक रही है या झूठी मान्यताओं से जूझ रही है, युवा सत्य की ओर आसान और तेजी से कदम बढ़ाता है।

एक छोटी लड़की, जो कभी-कभार मेरी बातें सुनती थी, ने अपनी उंगली को बुरी तरह जख्मी कर लिया। ऐसा लग रहा था कि उसने इसे नोटिस नहीं किया। इसके बारे में पूछे जाने पर उसने सरलता से उत्तर दिया, "सामग्री में कोई सनसनी नहीं है।" हंसती निगाहों से बंधते हुए, उसने वर्तमान में कहा, "मम्मा, मेरी उंगली थोड़ी खराब नहीं है।"

8. 322 : 26-9

पदार्थ के सपोसिटिव जीवन में विश्वास के तेज अनुभव, साथ ही साथ हमारी निराशा और निरंतर व्यर्थ, हमें थका हुआ बच्चों की तरह दिव्य प्रेम की ओर मोड़ते हैं। तब हम जीवन को दिव्य विज्ञान में सीखना शुरू करते हैं। वीनिंग की इस प्रक्रिया के बिना, "क्या तू खोज कर ईश्वर को खोज सकता है?" सत्य को स्वयं की गलती से छुटकारा देने के लिए इच्छा करना आसान है। मुर्दा लोग क्रिश्चियन साइंस की समझ की तलाश कर सकते हैं,

लेकिन वे क्राइस्टचियन साइंस से उनके लिए प्रयास किए बिना तथ्यों को चमकने में सक्षम नहीं होंगे। इस संघर्ष में हर तरह की त्रुटि का त्याग करने और कोई अन्य चेतना नहीं बल्कि अच्छा होने का प्रयास शामिल है।

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है, जो विज्ञान के स्थल हैं।

9. 259 : 6 (मं)-14

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

10. 37 : 16-17, 22-25

यीशु के तथाकथित अनुयायी कब उसके सभी मार्गों में उसका अनुसरण करना और उसके महान कार्यों का अनुकरण करना सीखेंगे?

यह संभव है, - हाँ, यह प्रत्येक बच्चे, पुरुष और महिला का कर्तव्य और विशेषाधिकार है, - कि उन्हें कुछ हद तक स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य और जीवन के प्रदर्शन द्वारा मास्टर के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

11. 227 : 21-26

क्रिश्चियन साइंस स्वतंत्रता और रोने के मानक को बढ़ाता है: "मेरे पीछे आओ! बीमारी, पाप, और मृत्यु के बंधन से बचो!" यीशु ने रास्ता चिह्नित किया। दुनिया के नागरिक, "परमेश्वर के बच्चों की शानदार स्वतंत्रता" स्वीकार करें और मुक्त रहें! यह तुम्हारा दिव्य अधिकार है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6